जयपुर जिले की चौमूं तहसील में जनांकिकी संरचना का बदलता स्वरूप

डॉ. प्रकाश चन्द बाजिया

परिचयः

किसी स्थान की भौगोलिक अवस्थिति एक महत्वपूर्ण तत्व है। जिसका प्रभाव उस क्षेत्र की न केवल जलवायु अपितु उस क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास और वहां की गतिविधियों पर पड़ता है। जयुपर जिले की चौमूं तहसील राजस्थान के भौतिक विभाग पूर्वी मैदानी के उपार्द्र जलवायु खण्ड में स्थित है। यह स्थलाकृति सतही जलप्रवाह कम, समतल मैदान तथा भूमि मृदा के आवरण से युक्त है। चौमूं तहसील की समुद्र तल से औसत ऊॅचाई 250 से 350 मीटर है। चौमूं तहसील की अवस्थिति 27^0 09′ 0′′ से 27^0 10′ 38′′ उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। तथा 75^0 42′ 43′′ से 75^0 44′ 15′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित चौमूं तहसील का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 683.61 वर्ग कि.मी. है, जिसमें मोरीजा, जैतपुरा, अनंतपुरा गाँव भी सम्मिलित है।

चौमूँ तहसील राजस्थान के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। यह तहसील उत्तर में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिलों की सीमा का निर्धारण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील चौमूं तहसील के उत्तर में स्थित है। इस सीमा पर चौमूं तहसील के किश्नपुरा, सिरसा, नांगल–गोविन्द, खेजरोली आदि गाँव अवस्थित हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में जयपुर जिले की शाहपुरा तहसील स्थित है। तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में आमेर तहसील स्थित है। इस सीमा पर तहसील के जाटावाली, चीथवाड़ी, अनन्तपुरा, जैतपुरा गाँव स्थित हैं। चौमूं तहसील के पश्चिम में जयपुर जिले की सांभर तहसील स्थित है।

किसी भी क्षेत्र के लिए जनसंख्या उसके जीवन के रक्त के रूप में होती है इसलिए जनसंख्या के अध्ययन के बिना क्षेत्र के किसी भी तत्व का अध्ययन सम्पूर्ण नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध प्रबंध के विश्लेषण में जनसंख्या का बहुत अधिक महत्व है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि, जल संसाधन उपयोग के दबाव को प्रभावित करती है यहीं कारण है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ चौमूं तहसील के जल संसाधनों का दोहन भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र का जल संकट बढ़ रहा है।

किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि का प्रतिफल होती है। एक निश्चित समयावधि में किसी स्थान के निवासियों की संख्या में हुये परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि द्वारा व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या तथा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिये निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है तथा वास्तविक वृद्धि दर ज्ञात करने के लिये 10 का भाग देकर ज्ञात की जाती है।

सारणी 1 : चौमूं तहसील में जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)

क्र.सं.	वर्ष	वृद्धि दर (कमी/वृद्धि)
1.	1931	—
2.	1941	23.88
3.	1951	33.69
4.	1961	22.14
5.	1971	27.79
6.	1981	42.82
7.	1991	33.66
8.	2001	31.63
9	2011	27.03

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2011 राजस्थान।

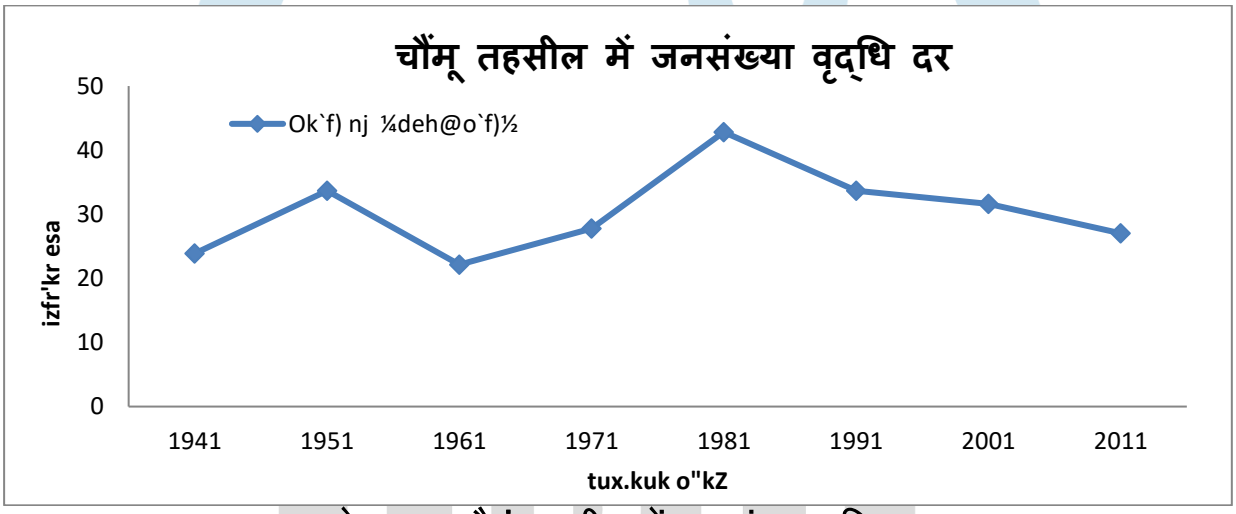

आरेख 1 : चौमूं तहसील में जनसंख्या वृद्धि दर

चौमूं तहसील में वर्ष 1941 में जनसंख्या वृद्धि दर 23.88 प्रतिशत थी जो वर्ष 1951 में बढ़कर 33.69 हो गई। वर्ष 1951 से 1961 के दशक में कुछ कारणों से अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई। वर्ष 1961 में चौमूं तहसील में जनसंख्या वृद्धि दर 22.14 प्रतिशत ही रही तथा वर्ष 1971 में यह 27.79 प्रतिशत रही। वर्ष 1981 में पुनः वृद्धि (42.82 प्रतिशत) देखने को मिली। वर्ष 1991 के पश्चात् वर्ष 2001 तथा वर्ष 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार कमी अंकित की जा रही है।

जनसंख्या दशकीय वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

भौतिक कारक :– जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों में भौतिक कारक महत्वपूर्ण है जिसमें धरातल जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, प्राकृतिक जल स्त्रोत आदि प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील में इन सभी भौतिक कारकों की अनुकूलता जिसमें समतल धरातल, उत्तम जलवायु, उपजाऊ मिट्टी, पर्यावरण संतुलन के लिए प्राकृतिक वनस्पति एवं सतही जल स्त्रोतों के कारण यहां जनसंख्या प्रभावित रही है।

आर्थिक कारक :– अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील में जनसंख्या को प्रभावित करने के लिए आर्थिक कारकों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिनमें खनिज, नगरीकरण, औद्योगिक विकास एवं परिवहन के साधन आदि

ने जनसंख्या के लिए आधारभूत सुविधाओं का ढांचा तैयार किया है जिससे यहां पर जनसंख्या घनत्व एवं वितरण प्रभावित रहा है।

सामाजिक कारकः– सामाजिक कारक भी जनसंख्या को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाते है जिसमें पारिवारिक संरचना, शिक्षा, लिंगानुपात, मनोरंजन के साधन, आवास सुविधा, सामाजिक सुरक्षा आदि ने भी चौमूं तहसील के जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित किया है।

चौमूं तहसील की जनसंख्या का वितरण असमान है तहसील में कहीं पर बहुत ज्यादा जनसंख्या निवास करती है तो कही पर बहुत कम जनसंख्या निवास करती है। सामान्यतः अरावली पर्वतमाला क्षेत्र के समीप स्थित होने के कारण तहसील के पश्चिमी एवं उतरी पश्चिमी भागों में विरल एवं छितरी हुई जनसंख्या पाई जाती है, जबकि पूर्वी एवं उतरी पूर्वी क्षेत्र में सघन जनसंख्या पाई जाती है। क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण जल की उपलब्धता, परिवहन सुविधा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के अनुरूप है।

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व

मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आई जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण प्रारूप ही सरलता से मिलता है और न ही इसके वितरण का स्पष्टीकरण क्योकि वर्तमान समय में जनसंख्या वितरण बहुत अधिक क्षेत्रिय विस्तार लिये हुये है और साथ ही राजनैतिक एवं प्रशासनिक ईकाईयाँ भी बढ़ गई है। अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल प्रक्रिया जरूर है, लेकिन जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का सफलतापूर्वक विष्लेषण किया है।

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या वितरण किसी क्षेत्र कि जनांकिकीय विशेषताओं के अध्ययन का आधार होता है, जनसंख्या का वितरण क्षेत्रीय प्रारूप की और इशारा करता है जनसंख्या वितरण से आशय विभिन्न क्षेत्रों में लोग कितनी संख्या में निवास करते है से है। चौमूं तहसील में जनसंख्या का वितरण असमान है यहाँ कहीं पर बहुत अधिक जनसंख्या निवास करती है तो कहीं पर बहुत कम जनसंख्या निवास करती है।

सारणी 2: चौमूं तहसील में जनसंख्या वितरण

क्षेत्र	जनसंख्या					
	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	पुरूष	महिला	*कुल*	पुरूष	महिला	*कुल*
ग्रामीण	143709	132071	*275780*	171817	158775	*330592*
शहरी	26630	24078	*50708*	33850	30567	*64417*
कुल	170339	156149	*326488*	205667	189342	*395009*

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011, राजस्थान।

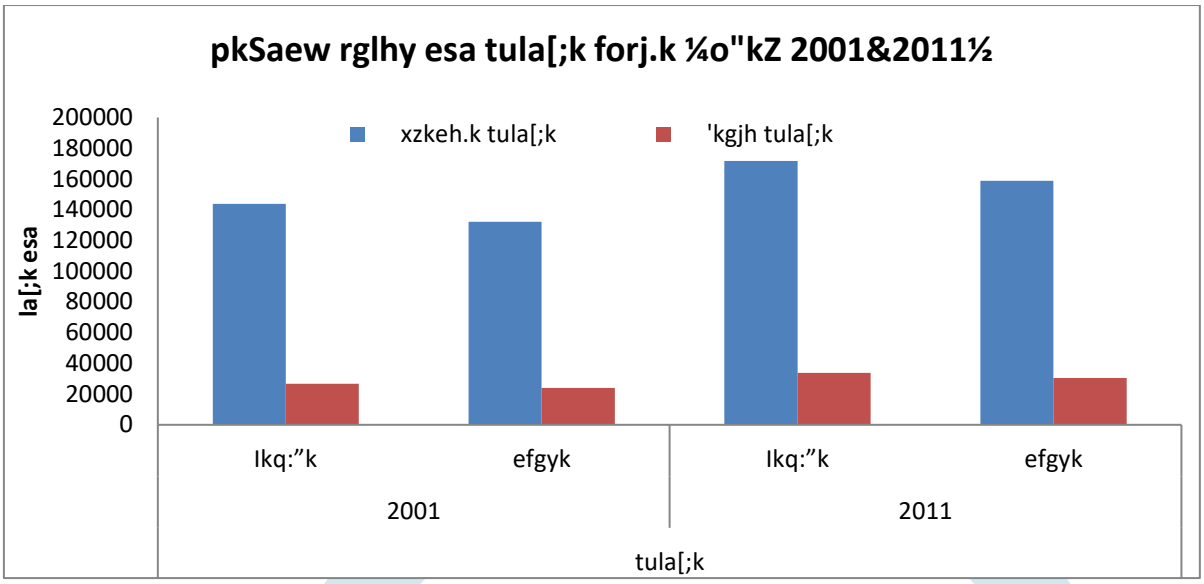

आरेख 2: चौमूं तहसील में जनसंख्या

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार जयपुर जिले की चौमूं तहसील की कुल जनसंख्या 3,26,488 थी। तहसील में ग्रामीण जनसंख्या 2,75,780 व्यक्ति तथा शहरी जनसंख्या 50,708 व्यक्ति थी। पुरूष जनसंख्या वर्ष 2001 में 1,70,339 थी, जिसमें 1,43,709 ग्रामीण तथा 26,630 शहरी जनसंख्या थी।

इसी प्रकार चौमूं तहसील की वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या 3,95,009 है। अध्ययन क्षेत्र की वर्ष 2011 में ग्रामीण जनसंख्या 3,30,592 थी तथा शहरी जनसंख्या 64,417 है। कुल जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या 2,05,667 तथा स्त्री जनसंख्या 1,89,342 आंकी गई है।

जनसंख्या घनत्व

प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं, संतुलित जनसंख्या घनत्व किसी प्रदेश की उन्नति और भावी विकास का अनुमान लगाने में मुख्य आधार होता हैं। जनसंख्या घनत्व कई कारणों का परिणाम हैं जिसमें प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और कृषि आदि कारकों को गिनाया जा सकता हैं अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक असमानता के कारण यहाँ जनसंख्या घनत्व में विभिन्नता पाई जाती है।

सारणी 3: चौमूं तहसील: जनसंख्या घनत्व

तहसील	क्षेत्र	जनसंख्या घनत्व	
		2001	2011
चौमूं तहसील	ग्रामीण	417	500
	शहरी	2251	2859
	योग	478	578

स्त्रोत: जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011 राजस्थान।

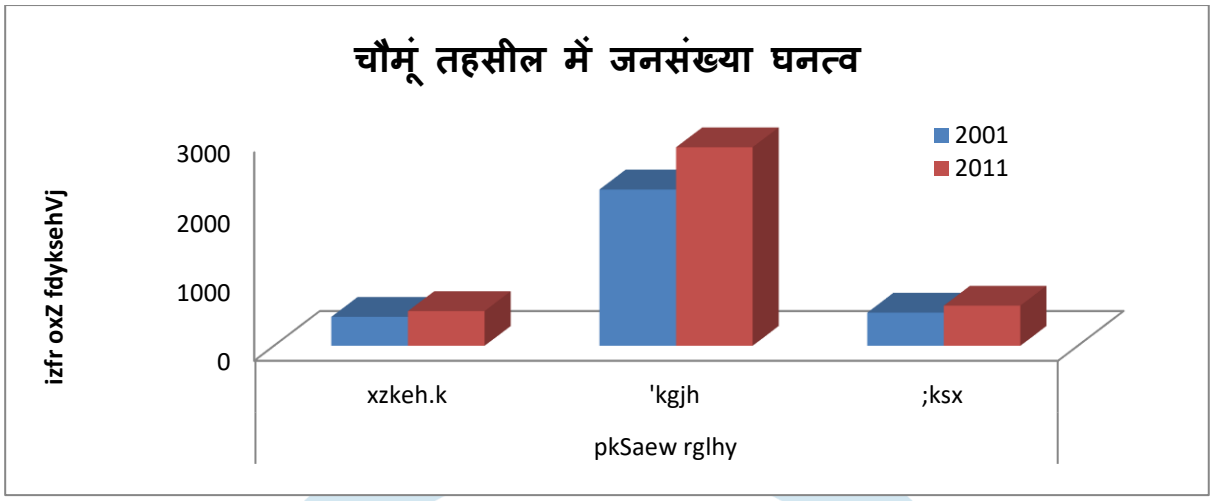

आरेख 3: चौमूं तहसील में जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या वितरण को पूर्णतः विश्लेषण जनसंख्या घनत्व के माध्यम से किया जाता है। जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रति इकाई में रहने वाले लोगों की संख्या से है। चौमूं तहसील में वर्ष 2001 कुल जनघनत्व 478 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जो बढ़कर वर्ष 2011 में 578 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गया। वर्ष 2001 में तहसील का ग्रामीण जनघनत्व 417 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर, वर्ष 2011 में 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। चौमूं तहसील का 2001 में शहरी जनघनत्व 2251 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर, वर्ष 2011 में यह शहरी जनघनत्व 2859 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। अध्ययन क्षेत्र में ज्यादातर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो में निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कुल 116 आबाद गाँव हैं जिनका जनघनत्व पूर्णतया ग्रामीण क्षेत्रों में फैला हुआ है।

लिंगानुपात

किसी क्षेत्र की जनसंख्या में लिगांनुपात पुरूष एवं स्त्रियों के मध्य अनुपात का सूचक लिंगानुपात प्रति एक हजार पुरूषों पर स्त्रीयों की संख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार चौमूं तहसील का लिंगानुपात 921 हैं।

सारणी 4: चौमूं तहसील में लिंगानुपात

तहसील	2001			2011			कमी या वृद्धि
	नगरीय	ग्रामीण	कुल	नगरीय	ग्रामीण	कुल	
चौमूं तहसील	904	919	917	903	924	921	3

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011 राजस्थान।

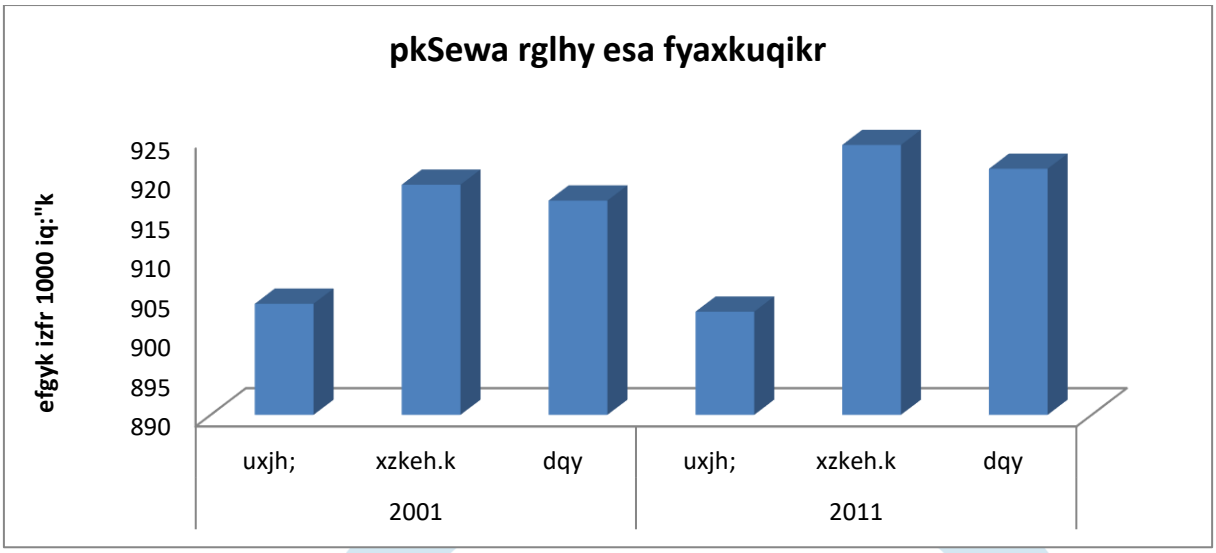

आरेख 4 : चौमूं तहसील में लिंगानुपात

चौमूं तहसील की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 में 326488 थी जिसका कुल लिंगानुपात 917 था जो वर्ष 2011 में बढ़कर 921 हो गया जबकि तहसील की वर्ष 2011 की कुल जनसंख्या 395009 थी, जिसमें 4 महिलाओं की वृद्धि हुई है।

तहसील का नगरीय लिंगानुपात वर्ष 2001 में 904 था जो वर्ष 2011 में घटकर नगरीय लिंगानुपात 903 हो गया। जिसमें नगरीय लिंगानुपात में 1 महिला की कमी हुई है। इसी प्रकार तहसील का ग्रामीण लिंगानुपात वर्ष 2001 में 919 था, जो कि बढ़कर वर्ष 2011 में 924 हो गया। ग्रामीण लिंगानुपात में 5 महिलाओं की वृद्धि हुई है।

साक्षरता

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारको में आर्थिक विकास का स्तर नगरीकरण, जीवन स्तर, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख है। चौमूं तहसील में साक्षरता का अध्ययन यदि कृषि कार्य के संदर्भ में करे तो कृषि विकास एवं आधुनिकरण प्रक्रिया हेतु किसान का साक्षर होना आवश्यक हैं। शिक्षित किसान कृषि उत्पादन की नई तकनीकियों को मशीनरी आदि के बारे में जानकारी विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त करके आसानी से अपने व्यवसाय में अपना लेता है तथा अशिक्षित किसान पुरानी कृषि पद्धति एवं रूढिवादी विचारों के आधार पर ही कृषि कार्य करता है। अशिक्षित किसान कृषि को देवी–देवताओं का दान या उपकार मानते है। जबकि शिक्षित किसान इन विचारों से दूर रहते हुए कृषि में नई तकनीकियों एवं औजारों का प्रयोग करता हुआ कृषि उत्पादन में वृद्धि करता है। शिक्षित किसान साख सुविधाओं कृषि विपणन आदि सुविधाओं का भी अधिकतम लाभ प्राप्त करने की दिशा में हमेशा तत्पर रहता हैं।

सारणी संख्या 5: चौमूं तहसील साक्षरता– वर्ष 2001–2011

क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत में					
	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
ग्रामीण	82.87	46.73	65.63	85.97	45.10	71.52
शहरी	87.96	57.46	73.51	90.21	67.74	79.39
कुल	83.69	48.43	66.81	86.76	58.24	72.97

स्रोत : कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी, जयपुर वर्ष 2001,2011

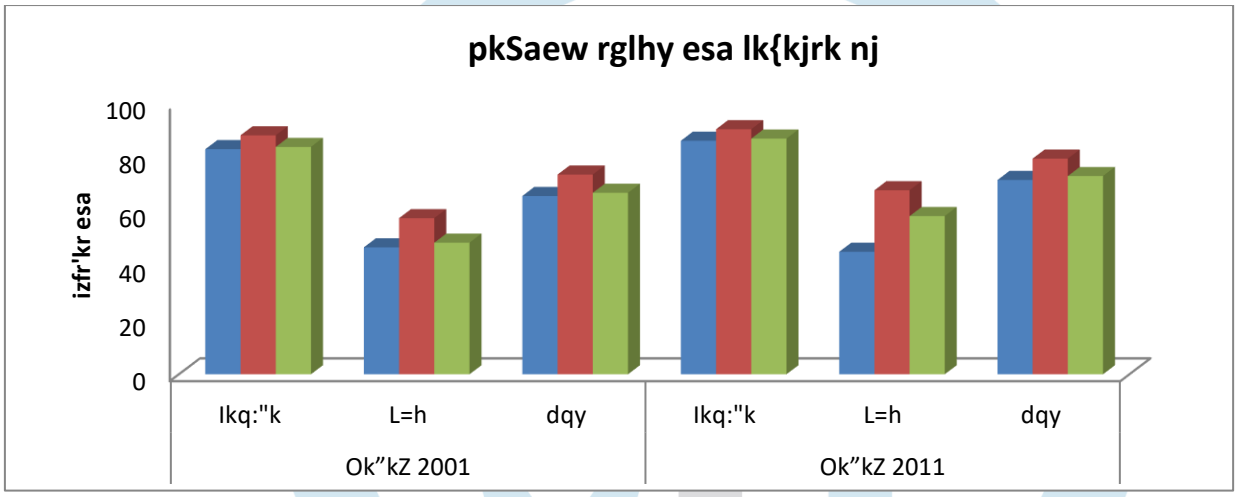

आरेख 5: चौमूं तहसील में साक्षरता दर

अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील साक्षरता की दृष्टि से मध्यम स्थान रखता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षरता मात्र 66.81 प्रतिशत थी। जिसमें ग्रामीण 65.63 प्रतिशत तथा शहरी 73.51 प्रतिशत थी। सन् 2011 में साक्षरता में काफी अधिक बढोत्तरी हुई। जिसका प्रतिशत 72.97 था, जिसमें से ग्रामीण 71.52 प्रतिशत तथा शहरी 79.39 प्रतिशत हो गई। इस दशक में ग्रामीण क्षेत्र में काफी अधिक साक्षरता की दर बढ़ी। इसका मुख्य कारण क्षेत्र में स्कूलों का अधिक खुलना तथा लोगों में जागरूकता का होना है। ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में साक्षरता का प्रतिशत अधिक है। इसका मुख्य कारण शहरों में सुविधा का अधिक होना है।

व्यवसायिक जनसंख्या

जनसंख्या को आर्थिक गतिविधियों के आधार पर मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। जो निम्न प्रकार से है–

1. कार्यशील जनसंख्या
2. सीमांत जनसंख्या
3. अकार्यशील जनसंख्या

1. **कार्यशील जनसंख्या**:– ऐसे व्यक्ति जो वर्ष के अधिकांश समय अर्थात् 200 दिन या इसमें अधिक दिन कार्य करते है, उन्हे कार्यशील माना जाता है।
2. **सीमांत जनसंख्या**:– ऐसे व्यक्ति जो वर्ष में कुछ समय के लिए कार्य करते है, किन्तु अधिकांश समय कार्य में संलग्न नही रहते, उन्हे सीमांत कार्य करनें वाला माना जाता है।

3. **अकार्यशील जनसंख्या**:– ऐसे व्यक्ति जिन्होने आर्थिक गतिविधियों के अन्तर्गत कभी कार्य नहीं किया हो, उन्हे अकार्यशील माना जाता है।

सारणी 6: चौमूं तहसील: कार्यशील, सीमांत व अकार्यशील जनसंख्या वितरण (वर्ष 2001–2011)

श्रेणी	वर्ग	2001	2011
कार्यशील	पुरुष	68185 (40.03)	86720 (42.17)
	महिला	24589 (15.75)	42947 (22.68)
	कुल	92774 (28.42)	129667 (32.83)
सीमांत	पुरुष	6016 (3.53)	11516 (5.60)
	महिला	15563 (9.97)	21132 (11.16)
	कुल	21579 (6.61)	32648 (8.27)
अकार्यशील	पुरुष	96138 (56.44)	107431 (52.24)
	महिला	115997 (74.29)	125263 (66.16)
	कुल	212135 (64.97)	232694 (58.91)
कुल		326488 (100)	469792 (100)

स्त्रोत: आर्थिक सांख्यिकी प्रतिवेदन, जयपुर, वर्ष 2001 एवं 2011

क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कार्यशील जनसंख्या को अनुकूल माना गया है। चौमूं तहसील में वर्ष 2001 से 2011 तक कुल जनसंख्या में कार्यशील ,सीमांत व अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत सारणी में दर्शाया गया है। वर्ष 2001 के आकड़ों के अनुसार अकार्यशील व्यक्तियों का प्रतिशत 64.97 था जबकि कार्यशील व्यक्तियों का प्रतिशत 28.42 था तथा सीमान्त व्यक्तियों का प्रतिशत 6.61 था। इस दशक में अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या एवम् सीमांत जनसंख्या से कही अधिक था। इस प्रकार से वर्ष श 2011 में अकार्यशील व्यक्तियों की संख्या का प्रतिशत 58.91 था तथा सीमान्त व्यक्तियों 8.27 प्रतिशत था। कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 32.83 है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना:–

व्यावसायिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील की जनसंख्या को काश्तकार, खेतीहर मजदूर व पारिवारिक उद्योगों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जिसका विवरण सारणी में दिया गया है।

सारणी 7: चौमूं तहसील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

कार्य	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
काश्तकार	33955 (45.76)	28456 (70.87)	62411 (54.58)	39953 (40.67)	40023 (62.46)	79976 (49.27)
खेतीहर मजदूर	2155 (2.90)	2334 (5.81)	4489 (3.93)	3865 (3.93)	4283 (6.68)	8148 (5.02)
पारिवारिक उद्योग	2783 (3.75)	2249 (5.60)	5032 (4.40)	2905 (2.96)	2660 (4.15)	5565 (3.43)
अन्य कार्य करने वाले	35308 (47.58)	7113 (17.72)	42421 (37.10)	51513 (52.44)	17113 (26.71)	68626 (42.28)
			114353 (100.00)			162315 (70.87)

स्त्रोतः आर्थिक सांख्यिकी प्रतिवेदन, जयपुर, वर्ष 2001 एवं 2011

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक काश्तकारी वर्ग में व्यावसायिक लोगों का प्रतिशत 54.58 था जिसमें पुरुषों का प्रतिशत 45.76 व महिलाओं का प्रतिशत 70.87 था। वर्ष 2011 में काश्तकारों का प्रतिशत घटकर 49.27 प्रतिशत हो गया, जिसमें पुरुषों का प्रतिशत 40.67 व महिलाओं का घटकर 62.46 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2001 में खेतीहर मजदूरों का कुल प्रतिशत 3.93 था जिसमें पुरुषों का प्रतिशत 2.90 व महिलाओं का प्रतिशत 5.81 था जो वर्ष 2011 में बढ़कर कुल प्रतिशत 5.02 हो गया। खेतीहर मजदूरों में पुरुषों का प्रतिशत 3.93 तथा महिलाओं का प्रतिशत 6.68 हो गया। वर्ष 2001 में पारिवारिक उद्योगों में लगे लोगों का कुल प्रतिशत 4.40 था, जो घटकर वर्ष 2011 में 3.43 हो गया। वर्ष 2001 में पारिवारिक उद्योगों में लगे पुरुषों का प्रतिशत 3.75 था जो घटकर वर्ष 2011 में 2.96 प्रतिशत हो गया। जबकि पारिवारिक उद्योगों में लगी महिलाओं का औसत वर्ष 2001 में 5.60 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011 में 4.15 प्रतिशत हो गया।

अन्य कार्य करने वाले मजदूरों का वर्ष 2001 में कुल प्रतिशत 37.10 था, जिसमें पुरुषों का प्रतिशत 47.58 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2011 में 52.44 प्रतिशत हो गया।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2001 में लगी अन्य कार्यो में महिलाओं का औसत 17.72 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 26.71 प्रतिशत हो गया।

सारांश रुप में देखा जाए तो काश्तकारों एवं पारिवारिक उद्योग में लगे लोगों का प्रतिशत 2001 की तुलना में 2011 में घटा है। शेष खेतीहर मजदूरों तथा अन्य कार्य करने वालों के प्रतिशत में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आई जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण प्रारूप ही सरलता से मिलता है और न ही इसके वितरण का स्पष्टीकरण क्योंकि वर्तमान समय में जनसंख्या वितरण बहुत अधिक क्षेत्रीय विस्तार लिये हुये है और साथ ही राजनैतिक एवं प्रशासनिक ईकाईयाँ भी बढ गई है। अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल प्रक्रिया जरूर है, लेकिन जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का सफलतापूर्वक विश्लेषण किया है।

अध्ययन क्षेत्र में पुरूष साक्षरता की तुलना में महिला साक्षरता कम है इसका प्रमुख कारण स्त्रियों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना है तथा इसके अलावा अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का ज्यादा भाग ग्रामीण होने के कारण पुरूष व स्त्रियाँ कृषि कार्यो में लगे हुए हैं एवं बच्चों को भी शीघ्र ही खेती के काम मे लगा लिया जाता है। वर्तमान समय में क्षेत्र में आज भी बच्चो को स्कूल न भेजकर घरेलू व कृषि कार्यो में अधिकाधिक रूप से लगाया जाता है। साथ ही क्षेत्र में शैक्षिक सुविधाओं का भी अभाव है। परन्तु जिले में सरकार ने साक्षरता को बढाने हेतु शिक्षा कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना आदि के माध्यम से प्रयासरत है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में सरकार विशेष आर्थिक भार उठाकर शिक्षा के प्रसार का प्रयास कर रही है। जिससे अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बढ रहा है।

किसी क्षेत्र या देश का आर्थिक विकास जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों से प्रभावित होता है उससे कहीं अधिक योगदान क्षेत्र के आर्थिक विकास मे जनसंख्या का होता है प्राकृतिक संसाधन निष्क्रिय होते है लेकिन मानव ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है जनसंख्या, श्रम, पूर्ति, कार्य क्षमता, कार्यकुशलता, साक्षरता ,स्वास्थ्य आदि सभी तथ्य मानव शक्ति के रूप में प्रभाव दिखाते है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि के विकास से सिंचाई क्षेत्र में, उत्पादकता, रोजगार आदि में भी वृद्धि हुई है। यहां भूमि उपयोग परिवर्तन पर जनसंख्या का दबाव अधिक रहा है जिससे यहां आर्थिक सामाजिक विकास भी बढ रहा है और भूमि उपयोग को विभिन्न विधियों के साथ समायोजित किया जा रहा है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि क्षेत्र कृषि विकास व रोजगार सम्भावना के साथ–साथ मानव विकास सूचकांकों में वृद्धि होगी जिससे क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ ग्रंथ :

1- जिला गजेटियर, जिला जयपुर (1998)।
2- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला जयपुर (2001)।
3- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला जयपुर (2010)।
4- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला जयुपर (2011)।
5- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जयपुर (2012)।
6- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जयुपर (2013)।
7- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जयुपर (2014)।
8- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जयपुर (2015)।
9- जनगणना रिपोर्ट, 2001–2011, जिला जयुपर।
10- सक्सेना हरिमोहन, राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी वर्ष 2018 पृ. 163।
11- मौसम विभाग रिपोर्ट (2014), जयपुर।
12- मौसम विज्ञान केन्द्र, जोधपुर (2014)।